८० अखण्ड समाज के आधार पर सार्वभौम व्यवस्था होता है |

२१.०६.१३

अखण्ड समाज का आधार ही मानव जाति एक होना, मानव धर्म एक होना होता है | इस मुद्दे पर अभी तक किसी भी समुदाय ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया है | मानव जाति एक होने के आधार पर अखण्ड समाज होना सहज है | अखण्ड समाज के आधार पर ही अखण्ड समाज व्यवस्था का बात होगा | सार्वभौम व्यवस्था दस सोपानीय होता है | इसको स्पष्ट कर चुके हैं | समाज शास्त्र में और मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान में स्पष्ट है | यह विकल्प विधि से पाया है, परम्परा विधि से नहीं | इस पर बारम्बार सोचना है |

मानव धर्म ही समाधान है | अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के अलावा समाधान को पाया नहीं जाता | दूसरी विधि से समाधान बनता ही नहीं चाहे कितना भी विद्वान हों, चाहे कितना भी सभा हों | इसको परिशीलन किया जा सकता है | अखण्ड समाज के बिना सार्वभौम व्यवस्था की बात ही नहीं होती | सार्वभौमता अपने आप में चारों अवस्थाओं का अपने-अपने आचरण के आधार पर लक्षित है | इस बात को देखा गया है कि सर्वदेश कालीय मानव मानवेतर प्रकृति की अवस्थाओं के आचरण पर विश्वास करता है | पदार्थावस्था का आचरण मृद् , पाषाण, मणि, धातु के रूप में विश्वास किया है | मानव जाति विश्वास किया है | मानव का आचरण विभिन्न समुदायों के रूप में विश्वास किया यह दिखता नहीं, मनुष्येतर प्रकृति के साथ दिखता है, यह देखा गया है, समझा गया है तभी विकल्प की आवश्यकता आयी | विकल्प विधि से मानव जात एक होना, सभी सुखी होने के आधार पर- राजा से चपरासी तक हर व्यक्ति सुखी होने के लिये कार्य करता है | कार्य करने का विधि को परिशीलन किया गया है |

यह कायिक, वाचिक, मानसिक रूप में होता है | ऐसा कायिक, वाचिक, मानसिक रूपी कार्यक्रम कृत, कारित, अनुमोदित रूप मे होना देखा गया है | यह हर व्यक्ति शोध कर सकते हैं | समझने के बाद ही आचरण की बात आती है | मानव का आचरण जागृति विधि से आचरण कर देखा गया है, व्यवहारिक होना पाया गया है | इस क्रम में मानव का एक लक्ष्य होना पाया जाता है | मानव जाति एक हुए बिना मानव धर्म को पहचानना होता नहीं | व्यवस्था सार्वभौमता के आधार पर ही सार्थक होना पाया जाता है | इस क्रम में चारों अवस्था के साथ व्यवस्था होना पाया जाता है | चारों अवस्था के साथ व्यवस्था के बिना सार्वभौमता होता नहीं | व्यवस्था,चारों अवस्था का पहचान ही है निर्वाह | पहचान, निर्वाह ही आचरण है | प्रत्येक अवस्था का आचरण को बनाए रखते हुये स्वयं के आचरण को बनाए रखना सार्वभौमता है | सार्वभौम व्यवस्था के आधार पर चारों अवस्था का व्यवस्था उन उन के आचरण के अनुसार होना देखा गया है |

इसको क्रियान्वयन कर लेना ही जागृत चेतना है | जागृत चेतना में ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना प्रामाणित होता है | इसका दूसरी भाषा व्यवहार प्रमाण, विचार प्रमाण, अनुभव प्रमाण ही है | इन तीनों विधि से प्रमाण का स्वरूप स्पष्ट हो चुकी है | यह व्यवहारिक है | इसी में मानव जागृत होना प्रमाणित करता है | मानव जागृत होने का प्रमाण ही है मानवीयतापूर्ण आचरण | अनुभव पूर्वक ही मानवीयतापूर्ण आचरण की पूर्णता जीवन मूल्यों की संतुष्टि के रूप में प्राप्त होता है | इस विधि विधान से मानव अपने महिमा को बनाए रख सकता है | मानव का महिमा मानवीयता है | मानवीयता ही जागृति है | दूसरा भाषा में मानवीयता ही जागृत चेतना है | जागृत चेतना ही मानव, देव, दिव्य मानव रूप में स्पष्ट है | अमानव अजागृत रहता है | मानव का चैतन्य पद में प्रतिष्ठा होना नैसर्गिक है | नैसर्गिकता का मतलब विकास क्रम-विकास, जागृति क्रम-जागृति ही है | यही विधि है | इस विधि से मानवीयता का पहचान होता है | मानवीयता ही मानव का स्वत्व है | मानव का स्वत्व ही परम्परा है | परम्परा ही वैभव है | वैभव ही अखण्डता सार्वभौमता है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- **ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)**